www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य्य मार्तण्ड

❖❖ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक ❖❖

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प – आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क, जयपुर

वर्ष: 87 अंक 22
श्रावण शुक्ला पूर्णिमा
विक्रम संवत 2070
कलि संवत 5115
21 अगस्त से 5 सितम्बर 2013 तक
दयानन्दाब्द 189
सृष्टि सम्वत् 1, 96, 08, 53, 114

मुख्य सम्पादक :
पं. अमर सिंह आर्य, 9214586018
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

संपादक मंडल:
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजय सिंह भाटी, जोधपुर
डॉ. सुधीर आर्य, बगरू
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री, अलवर
श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्री अर्जुन देव चड्ढा, कोटा
श्रीमती अरूणा सतीजा, जयपुर
श्री सत्यपाल आर्य, अलवर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य, अलवर

प्रकाशक:
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
राजापार्क, जयपुर
दूरभाष- 0141-2621879
प्रकाशन: दिनांक 1 व 15
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता
अमर मुनि वानप्रस्थी
सम्पादक आर्य मार्तण्ड, सेढ़ का टीला
केडलगंज, अलवर (राज.)
मोबाईल- 9214586018

मुद्रक:
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशियेट्स,जयपुर
ग्राफिक्स :
भार्गव प्रिन्टर्स, दारुकूटा, अलवर
Email: bhargavaprinters@gmail.com
Email:aryamartand@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया

श्री छोटूसिंह आर्य
एक जुझारू व्यक्तित्व

बहुआयामी प्रतिभा के धनी आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान व आर्य कन्या विद्यालय समिति के कर्णधार श्री छोटूसिंह जी आर्य का जन्म 11 अगस्त सन् 1921 में राजस्थान के सिंहद्वार अलवर में हुआ। 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' इस उक्ति को आपने विद्यार्थी जीवन में ही अद्भुत संगठन शक्ति और कर्मठता का परिचय देते हुए चरितार्थ किया। सन् 1942 में 'भारत छोड़ो आंदोलन' के 'करो या मरो' नारे की अनुपालना में आप विद्यार्थी जीवन में ही सक्रिय राजनीति में कूद पड़े।

श्री आर्य का विद्यार्थी जीवन से ही यूनियन के प्रति रुझान होने के कारण अपने साथियों के सहयोग से राजर्षि कॉलेज, अलवर में 'विद्यार्थी यूनियन' की स्थापना करायी और उसके प्रथम प्रीमियर बनने का सौभाग्य प्राप्त किया तथा यूनियन के उद्घाटन के लिए श्री प्रकाश एम.एल.ए. (जो बाद में पाकिस्तान में हाई कमिश्नर भी रहे) के द्वारा उद्घाटन कराने का निश्चय किया, किन्तु तत्कालीन प्राचार्य द्वारा अनुमति न देने पर आपने विद्रोहात्मक रुख अपनाते हुए कॉलेज में हड़ताल करवा दी और बाहर लॉन में ही यूनियन का उद्घाटन कराकर अपनी दृढ़ता का परिचय

यज्ञ से किसी दूसरे पदार्थो को अपना समझनें की प्रवृति नष्ट हो जाती है।

www.thearyasamaj.org

दिया। आपने सन् 1945 में विद्यार्थी जीवन में ही म्यूनिसिपल कमेटी के पद को सुशोभित कर 'नगर-पिता' होने का गौरव प्राप्त किया और पुनः 1950 में म्यूनिसिपल कमेटी में चुने गए।

श्री आर्य ऐसे कर्मयोगी थे जो अपने सहयोगियों को भी कर्मक्षेत्र में प्रवृत्त करने की अद्‌भुत क्षमता रखते थे। अपने इसी चुम्बकीय आकर्षण के बल पर सन् 1942-43 के दौरान आपने आर्य समाज के नेता श्री ओमप्रकाश त्यागी के आह्‌वान पर 'आर्यवीर दल' का गठन किया, जिसमें हजारों नौजवान साथी 'ओ३म्' के झण्डे के नीचे एकत्रित हुए-

मैं अकेला ही चला था, जानिबे मंजिल मगर।
लोग साथ आते गये, कारवां बनता गया।।

पाकिस्तान बनने से पूर्व श्री आर्य अपने साथी श्री कैलाश नाथ भार्गव व स्व. नवल किशोर भार्गव के साथ लाहौर गये और वहाँ 'गुरुदत्त भवन', लाहौर में 'आर्य वीर दल' के शिविर का संचालन किया। राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने के बावजूद शैक्षिक क्षेत्र में भी श्री आर्य ने सन् 1949 में लखनऊ विश्वविद्यालय से वाणिज्य में स्नातकोत्तर एवं विधि में स्नातक परीक्षाएँ उत्तीर्ण की।

श्री आर्य में बाल्यकाल से ही देशभक्ति का जज्बा एवं समाज के लिए कुछ करने की ललक इतनी प्रबल थी कि उन्होंने राजनीति को अपना कार्य क्षेत्र बनाया एवं समर्पित भाव से जनसेवा में जुट गये। आप 1946 में स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े और स्वतंत्रता सेनानी के रूप में जेल यात्रा की।

अपनी इसी कर्मठता एवं लोकप्रियता के कारण श्री आर्य सन् 1952 से 1962 तक अलवर शहर विधानसभा क्षेत्र के विधायक पद पर बने रहकर समर्पित भाव से लोकहित कार्य करते रहे। आपने अपने विधायक कार्यकाल में संघर्ष करते हुए देवी-देवताओं के नाम पर पशु-पक्षियों की बलि को रोकने हेतु विधान सभा में 1958 में जोरदार ढंग से इस मुद्दे को उठाया, जिसके परिणाम स्वरूप राज्य सरकार ने अपनी ओर से इस प्रस्ताव को मान्यता प्रदान कर यह विधेयक पास कराया। इसी का सुपरिणाम है कि आज प्रदेश में धार्मिक स्थलों पर बलि नहीं दिये जाने का कानून लागू है। आपकी लोकप्रियता के कारण ही सन् 1958 में पंचायती राज्य सम्मेलन में आपको स्वागत मंत्री के रूप में नेहरू जी, पंत जी, इन्दिरा जी एवं सुखाड़िया जी का स्वागत करने का गौरव प्राप्त हुआ।

श्री आर्य के जीवन पर अपने ज्येष्ठ भ्राता श्री रामजीलाल आर्य का विशेष प्रभाव रहा। श्री रामजीलाल आर्य जो निरन्तर नौ वर्ष तक नगर परिषद् के अध्यक्ष पद पर रहे, उन्होंने अपने कार्यकाल में ही नारी शिक्षा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अथक प्रयासों के बल पर स्वामी दयानन्द मार्ग पर भूखण्ड उपलब्ध कराया। 10 भूखण्डों को एकत्रित कर 12 एकड़ भूमि के विशाल प्रांगण में स्थित पूर्व संचालित आर्य कन्या पाठशाला जो आज वैदिक विद्या मंदिर, दयानन्द मार्ग, अलवर के नाम से जानी जाती है। जिसका आपने आर्य कन्या विद्यालय समिति के रूप में सन् 1956 में विधिवत् पंजीकरण कराया और तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया जी के कर-कमलों द्वारा इसका उद्‌घाटन कराया।

श्री आर्य सन् 1967 से 70 तक नगर विकास न्यास के अध्यक्ष रहे और अलवर शहर के नवीनीकरण में आपका पूर्ण योगदान रहा।

अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित अनेक सम्मेलनों में आपको स्वागत अध्यक्ष होने का गौरव प्राप्त हुआ। आपके सुप्रयासों से सन् 1972 में मॉरीशस के तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. शिवसागर राम गुलाम की अध्यक्षता में वैदिक विद्या मंदिर, अलवर में 11 वाँ आर्य महासम्मेलन सम्पन्न हुआ।

सन् 1973 में मॉरीशस के प्रधानमंत्री डॉ. राम गुलाम के आमंत्रण पर मुगल लाइन्स के 'अकबर' नामक जहाज से 1000 वैदिक प्रेमियों के सांस्कृतिक काफिले का नेतृत्व करते हुए 21 दिन की कठिन समुद्री यात्रा तय करके मॉरीशस पहुँचे एवं आर्य समाज के प्रचार-प्रसार हेतु आपने अनेक यूरोपीय देशों फ्रांस, जर्मनी, नैरोबी, दुबई, नेपाल आदि देशों की यात्रा की और वेदों का प्रसार किया।

सन् 1981 में उदयपुर में आयोजित 'सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह' का सफल आयोजन आपके सक्षम नेतृत्व एवं कार्यकुशलता का ज्वलंत उदाहरण है। सन् 1983 में आर्य समाज के प्रवर्तक 'स्वामी दयानन्द सरस्वती' का निर्वाण शताब्दी समारोह, अजमेर में मनाने का निश्चय किया। इस भागीरथ कार्य को करने हेतु 'परोपकारिणी सभा, अजमेर' ने इसका गुरुभार श्री आर्य को सौंपने हुए इन्हें स्वागताध्यक्ष पद से सुशोभित किया। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्‌घाटन किया। इसमें 27 देशों के प्रतिनिधि एवं दस लाख नर-नारियों ने दीपावली के दिन अपने श्रद्धेय गुरु को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। महर्षि दयानन्द जी के अनुयायियों की संगठन शक्ति को देखकर इन्दिरा जी भी चकित रह गई।

श्री आर्य प्रारम्भ से ही सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ रहे हैं। आपने दिवराला में रूपकँवर नाम की महिला को सती के नाम पर जिंदा जलाने के खिलाफ जेहाद छेड़ा और जनजागृति हेतु पदयात्रा भी की।

आपके नेतृत्व में निकाली गई इस पदयात्रा के परिणाम स्वरूप भारत सरकार को सतियों की समाधियों को महिमामंडित करने के खिलाफ कानून बनाना पड़ा। दलितोद्धार के क्षेत्र में भी आपने उदयपुर से नाथद्वारा तक पदयात्रा की व मंदिर के पुजारियों को दलितों को बराबर का सम्मान देने के लिए बाध्य किया। अलवर के नागरिक और विशेष रूप से आर्य नर-नारी आपके द्वारा किये गये सामाजिक कार्यों के लिए सदैव ही आपके आभारी हैं और रहेंगे।

डटे रहे साहस कर- तनिक न डगमगाये
आर्य जगत में- उदीयमान सितारे से चमकते
प्रकाश फैलाते रहे ज्योतिर्मान
दिग्दर्शन बन- प्रकाश स्तभ से।

सम्पादक- अमरमुनि

यज्ञ से प्रलोभन, आत्मश्लाघा के आकर्षण से मनुष्य सर्वथा पृथक हो जाता है।

www.thearyasamaj.org

आर्य कन्या विद्यालय समिति के संस्थापक प्रधान स्व. श्री छोटूसिंह आर्य के 93वें जन्मदिवस पर आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर के तत्वावधान में जन सहयोग से व श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता प्रधान आर्य कन्या विद्यालय समिति के नेतृत्व में आयोजित हुए कार्यक्रम

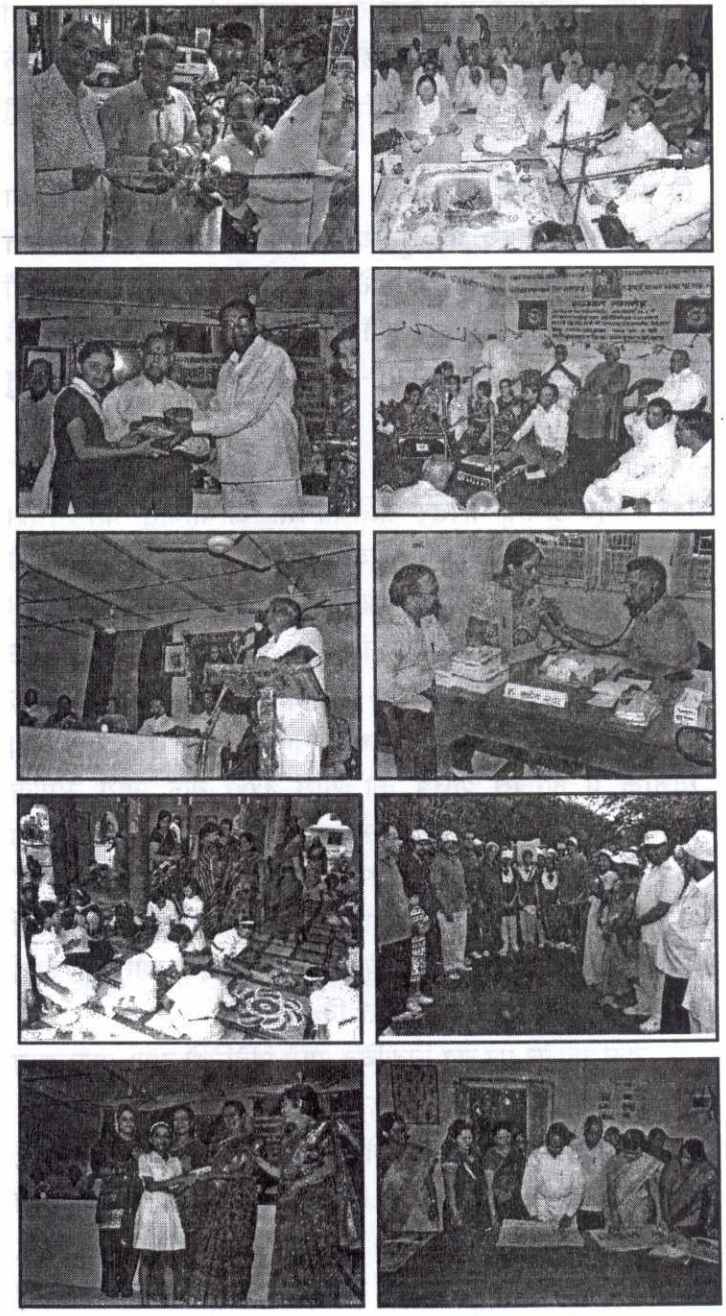

दिनांक 3 अगस्त 2013 को आर्य कन्या विद्यालय समिति के सभागार में सुश्री सपना भाटिया जॉइन्ट कमिश्नर इन्कम टैक्स, जयपुर ने छात्राओं को सम्बोधित किया।

मुख्य अतिथिजी ने अपने सम्बोधन में बच्चों को प्रेरित करते हुए शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला। हमारा उद्देश्य शिक्षा द्वारा अपना मानसिक एवं बौद्धिक विकास करना होना चाहिए ना कि रटना। समस्या को समझना और विचार करना सफलता का आधार है। छात्राओं को आज की समस्या से अवगत कराया तथा प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग एवं वातावरण को सुरक्षित रखने पर जोर दिया। उनका कहना था पानी, बिजली, पेड़ आदि हमारे लिए अत्यधिक उपयोगी हैं अतः हमें किसी भी प्रकार से इनका अनावश्यक उपयोग नहीं करना चाहिए। हमारा उद्देश्य सफल होकर धन कमाना नहीं होकर दूसरों को सहयोग करना होना चाहिए।

मंत्री प्रदीप आर्य ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा संस्था समिति के संस्थापक प्रधान स्व. श्री छोटूसिंह आर्य के कार्यों को याद करते हुए बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

दिनांक 4 अगस्त 2013 को प्रातः 7:00 बजे अरावली स्पोर्टस अकादमी के तत्वावधान में प्रतापबंध से बाला किला तक एक क्रॉस कट्री दौड़ का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि सपना भाटिया जॉइन्ट कमिश्नर इन्कम टैक्स, जयपुर ने हरी झण्डी दिखाकर दौड़ को रवाना किया। कुल 6.2 कि.मी. की इस क्रॉस कट्री दौड़ का आयोजन करने का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण और वन सम्पदा को बचाने के प्रति जागृति पैदा करना है। कुल छः आयु वर्गों में आयोजित इस दौड़ में विद्यालयों के छात्र/छात्राओं के अतिरिक्त शहर के अन्य नागरिकों की भागीदारी उल्लेखनीय रही। कार्यक्रम में सपना भाटिया, बी.पी. मुन्द्रा सी.ए. जयपुर, सुभाष गुप्ता सी.ए. भरतपुर, डॉ. हरीश गुप्ता, तरूण बंसल, धीरेन्द्र मदान, रवि अग्रवाल निदेशक नेशनल एकेडमी, जगदीश प्रसाद गुप्ता प्रधान आर्य कन्या विद्यालय समिति, प्रमोद यादव, डॉ. एस.सी. मित्तल, प्रदीप आर्य–अध्यक्ष नगर विकास न्यास, अशोक कुमार आर्य, कमला शर्मा आदि ने विजेताओं को विभिन्न आयु वर्ग में दस स्थानों तक पुरस्कृत किया तथा सभी प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें सदैव आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित किया।

दिनांक 5 अगस्त 2013 को प्रातः 10:30 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक न्यायालय परिसर में 54वॉ निःशुल्क चिकित्सा एवं जॉच शिविर के.एल. गुप्ता एडवोकेट टैक्स बार एसोसिऐशन के सहयोग से आयोजित किया गया। जिसका उद्घाटन जिला एवं सत्र न्यायाधीश अलवर श्री कैलाश चन्द शर्मा के कर कमलों

www.thearyasamaj.org

द्वारा किया गया। शिविर में निःशुल्क जॉच कर रोगियों को निःशुल्क दवाइयॉ वितरित की गई।

दिनांक 6 अगस्त 2013 को प्रातः 10:30 बजे 'स्वामी दयानन्द सरस्वती' की देन विषय पर द्वितीय निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गयी। प्रतियोगिता में समिति द्वारा संचालित समस्त संस्थाओं की 28 छात्राओं ने चार समूहों में भाग लिया। प्रतियोगिता के निर्णायक मण्डल में व्याख्याता– मंजू चौधरी, मनीषी मेहरू, रितु वर्मा थी।

दिनांक 7 अगस्त 2013 को प्रातः 10:30 बजे 'विद्यालय का वार्षिकोत्सव' विषय पर तृतीय रंगोली प्रतियोगिता आयोजित की गयी। प्रतियोगिता में समिति द्वारा संचालित समस्त संस्थाओं की 25 छात्राओं ने चार समूहों में भाग लिया। प्रतियोगिता के निर्णायक मण्डल में व्याख्याता– मंजू चौधरी, मनीषी मेहरू, रितु वर्मा थी।

दिनांक 8 अगस्त 2013 को प्रातः 10:30 बजे 'आर्य समाज' विषय पर प्रथम पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गयी। छात्राओं ने स्वामीजी के जीवन चरित्र एवं आर्य समाज से मिलने वाली शिक्षाओं पर अत्यन्त आकर्षक पोस्टर बनाए। प्रतियोगिता में समिति द्वारा संचालित समस्त संस्थाओं की 25 छात्राओं ने चार समूहों में भाग लिया। प्रतियोगिता के निर्णायक मण्डल में व्याख्याता– मंजू चौधरी, मनीषी मेहरू, रितु वर्मा थी।

दिनांक 9 अगस्त 2013 को सायं 4:00 बजे आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में यज्ञ एवं आर्य समाज का श्रेष्ठ कार्य करने के लिए तृतीय सम्मान समारोह में 'आर्य शिरोमणि' की उपाधि से श्री विद्यासागर शास्त्री पूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान जयपुर को शारदा देवी छोटूसिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर नव निर्वाचित आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान की कार्यकारिणी का अभिनन्दन किया गया।

दिनांक 10 अगस्त 2013 को आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर द्वारा संचालित उ.मा.वि. में अध्ययनरत प्रतिभाशाली सर्वश्रेष्ठ छात्राओं का सम्मान समारोह आर्य कन्या विद्यालय, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर के सभागार में आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि आर्य कन्या विद्यालय समिति के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता थे।

समस्त संस्थाओं में प्रथम आने पर भूमिका शर्मा को 2100/– रू., द्वितीय आने पर चान्दनी जैन को 1500/–, तृतीय आने पर ममता मीणा को 1100/– रू. तथा अन्य 63 छात्राओं को 60: से अधिक अंक प्राप्त करने पर तथा निबन्ध, रंगोली एवं पोस्टर प्रतियोगिता में (प्रथम– प्राथमिक स्तर, द्वितीय– उच्च प्राथमिक स्तर, तृतीय– उच्च माध्यमिक स्तर तथा चतुर्थ– महाविद्यालय स्तर) प्रत्येक स्तर पर प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को शारदा देवी छोटूसिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट व स्व. पं. वाचस्पति शास्त्री मेमोरियल ट्रस्ट दिल्ली द्वारा पुरस्कृत किया गया।

अमरमुनि– महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान, जगदीश प्रसाद आर्य– जिला प्रधान, अलवर, जगदीश प्रसाद गुप्ता तथा कमला शर्मा– निदेशक आर्य कन्या विद्यालय समिति ने अपने सम्बोधन में श्री छोटूसिंह आर्य का चरित्र वर्णन करते हुए कहा कि वे विद्यालय समिति में ही नहीं अपितु आर्य जगत में भी अपना विशेष स्थान रखते हैं। उन्होंने नारी शिक्षा को आगे बढ़ाया। नारी के शिक्षित होने से ही पूरा परिवार शिक्षित होता हैं। छोटूसिंहजी के कदमों पर चलते हुए आगे बढ़ते रहना होगा। हमें ऋषि दयानन्द के जीवन चरित्र पर आगे बढ़ने एवं परोपकार की भावना से कार्य करने के लिए प्रेरित किया। हमारे प्रेरणा स्त्रोत हैं, उनके दिखाए मार्ग पर चलते हुए हम आगे बढ़ रहे हैं।

दिनांक 11 अगस्त 2013 रविवार को प्रातः 9:30 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक बैंक ऑफ बड़ौदा, अलवर के विशेष सहयोग से जगदीश प्रसाद गुप्ता, प्रधान आर्य कन्या कन्या विद्यालय समिति के नेतृत्व में 55वॉ निःशुल्क एलोपैथिक चिकित्सा एवं जॉच शिविर स्वतन्त्रता सेनानी श्री छोटू सिंह आर्य धर्मार्थ हॉस्पिटल आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में लगाया गया। शिविर का उद्घाटन डॉ. सतीश कुमार माथुर, तिलकराज भुंगड़ा तथा आर.सी. जैन चीफ मैनेजर– बैंक ऑफ बड़ौदा ने किया।

शिविर में लगभग 250 रोगियों ने पंजीयन करवाकर एचबी, ब्लड शुगर, ब्लड प्रेशर आदि की निःशुल्क एवं लिपिड प्रो. , थायराइड, थायराइड प्रो., लिवर फंक्शन, किडनी फंक्शन, HBAIC आदि की रियायती दरों पर जॉच करवायी। रोगियों को आवश्यकतानुसार निःशुल्क दवाइयॉ दी गयी एवं रोगियों को निःशुल्क परामर्श दिया गया।

शिविर में डॉ. सतीश कुमार माथुर– थायराइड एवं मधुमेह रोग विशेषज्ञ, दिल्ली, डॉ. गोपाल गुप्ता–नेत्र रोग विशेषज्ञ, डॉ. अंजु गुप्ता– बी.डी.एस. दंत रोग विशेषज्ञ, डॉ. देशबन्धु गुप्ता– मुख्य चिकित्सा एवं स्वा. अधि. (से.नि.) एवं डॉ. डी.सी. शर्मा– मुख्य मातृ शिशु एवं स्वा. अधि. (से.नि.) ने अपनी सेवाऐं प्रदान की।

निदेशक– कमला शर्मा

यज्ञ से सतत पुरुषार्थ करने के पश्चात ही फल प्राप्त होता है। उससे मनुष्य संतुष्ट रहता है।

www.thearyasamaj.org

पर्यटकों को विशेष आकर्षण के लिए अलवर में पहली बार पतंग उत्सव

सर्च सोसायटी की ओर से दिनांक 18 अगस्त 2013 को सायं 4 बजे से स्थान- राजर्षि कॉलेज, अलवर में पंतग उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें अलवर के सभी आयु वर्ग के लोग बड़ी संख्या में भाग लेंगे। -*प्रमोद आर्य*

श्री छोटूसिंह आर्य ट्रस्ट की ओर से चतुर्थ कर्मवीर आर्य श्रेष्ठ पुरस्कार सम्मान समारोह-

आर्य जगत के प्रख्यात विद्वान एवं परोपकारिणी सभा के कार्यकर्ता प्रधान आदरणीय श्री धर्मवीर जी को श्री छोटूसिंह आर्य की सप्तम पुण्यतिथि के अवसर पर दिनांक 23 फरवरी 2014 को आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में सम्मानित कर्मवीर आर्यश्रेष्ठ से। - अशोक आर्य

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा

आर्य समाज ने सौंपा सहायता राशि का चैक उत्तराखण्ड त्रासदी के पीडितों के सहायतार्थ

कोटा, 8 अगस्त। आर्य समाज ने सदैव मानवीय मूल्यों का संरक्षण किया है एवं भारतीय संस्कृति को बनाए रखने में हमेशा बढावा दिया है। धन का महत्व अपनी जगह है और पीडित मानवता के सेवा करना एक महत्वपूर्ण सत्कर्म है। उक्त विचार अतिरिक्त जिला कलैक्टर एसबी जैमन ने आर्य समाज जिला सभा कोटा के प्रतिनिधि मण्डल को कहे।

गुरूवार को दोपहर आर्य समाज का एक प्रतिनिधिमण्डल जिसमें आर्य समाज जिला सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा, कैलाश बाहेती मंत्री, उपप्रधान श्रीचंद गुप्ता, आर्य समाज तलवण्डी के प्रधान रघुराज सिंह, पूर्व प्रधान रामप्रसाद याज्ञिक एवं शिवदयाल गुप्ता थे। अतिरिक्त जिला कलैक्टर को उनके कार्यालय में मिला। आर्य समाज की ओर से उत्तराखण्ड त्रासदी के पीडितों की सहायतार्थ 12 हजार रूपए का बैंक ड्राफ्ट प्रधानमंत्री राहत कोश के लिए उनको भेंट किया गया। आर्य समाज जिला सभा प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा ने कहा कि कोटा के अलावा आर्य समाज बूंदी, बारां, रावतभाटा से भी राशि एकत्र कर राहत कोष हेतु दिल्ली प्रतिनिधि सभा को भेजी गई है। जहां से उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री को प्रेषित कर दी गई है।

श्रीचंद गुप्ता, उपप्रधान जिला सभा

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, अलवर की बैठक में कई प्रस्ताव पास हुए

दिनांक 9 अगस्त 2013 को आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, अलवर की कार्यकारिणी की एक विशेष बैठक जिला प्रधान जगदीश प्रसाद आर्य की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में लिये गये कई निर्णयों में जिले की आर्य समाजों को अधिक गतिशील बनाने के लिये एक कमेटी का गठन हुआ, जो आर्य समाजों की समस्याओं को जानते हुए उन्हें समाधान का तरीका बतायेगी। बैठक में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित हुआ कि जिले की प्रत्येक आर्य समाज जिला सभा की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिय 250 रू. वार्षिक सहायता शुल्क जमा करायेगी। बैठक में कार्यालय मंत्री बृजेन्द्र देव आर्य को उप कोषाध्यक्ष का कार्यभार भी सौपा गया। बैठक में निर्णय लिया गया कि प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक भूपेन्द्रसिंह अलवर जिले में एक माह वैदिक प्रचार करेंगे। कोषाध्यक्ष धर्मसिंह आर्य ने आगामी वर्ष का वित्तीय बजट प्रस्तुत किया एवं वर्तमान आय-व्यय की स्थिति से अवगत कराया। जिला सभा के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान की नव निर्वाचित कार्यकारिणी के पदाधिकारियों एवं सदस्यों का माल्यार्पण एवं प्रतीक चिह्न देकर भव्य स्वागत किया। बैठक का संचालन जिला मंत्री हरिपाल शास्त्री ने किया।

- धर्मवीर आर्य, संयुक्त मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजापार्क जयपुर का निर्णय 'आर्य शिक्षण संस्थाओं में वैदिक नैतिक शिक्षा लागू हो'

दिनांक 9 अगस्त 2013 को प्रान्तीय सभा के प्रधान विजयसिंह भाटी की अध्यक्षता में आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में आयोजित 'आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान की महत्वपूर्ण बैठक में लिये गये कई निर्णयों में आर्य समाज द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं में वैदिक नीति के आधार पर नैतिक शिक्षा लागू कराने के पारित प्रस्ताव के अलावा राजा पार्क, जयपुर स्थित आर्य प्रतिनिधि सभा के सभा भवन का जीर्णोद्धार कराने एवं एक अतिथि कक्ष बनाने का प्रस्ताव भी पारित हुआ, जिसका दायित्व प्रधान विजयसिंह भाटी ने जनसहयोग से स्वयं अपने ऊपर ले लिया। प्रान्तीय सभा की बैठक में महामंत्री अमरमुनि ने आगामी वित्तीय वर्ष का बजट प्रस्तुत किया, जो सर्वसम्मति से पारित हुआ।

प्रान्तीय सभा की बैठक में राजस्थान प्रदेश की आर्य समाजों के निरीक्षण हेतु जिला स्तरीय एवं संभाग स्तरीय कमेटियां गठित की गई। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय हुआ कि शिक्षा पाठ्यक्रम में महर्षि दयानन्द के जीवन एवं वैदिक शिक्षा का पाठ जोड़ने के लिये राज्य सरकार को प्रस्ताव भेजा जावे। जिसके लिये कमेटी बनाई गई। बैठक में आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान का सम्मेलन दिनांक 27 से 30 सितम्बर 2013 तक जोधपुर में आयोजित करने का निर्णय भी लिया गया। इसके अलावा टमकौर जिला झुंझुनू में दिनांक 28 अगस्त से 2013 तक मनाये जाने वाले 'शताब्दी समारोह' के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा, *राजस्थान की आम सभा 31 अगस्त 2013 को बुलाने का फैसला लिया गया।* जिसमें संविधान संशोधन पर विचार किया जावेगा। संविधान संशोधन हेतु प्रधान श्री विजयसिंह भाटी को कमेटी बनाने का अधिकार दिया गया। अलवर जिले की समस्त आर्यसमाजों, आर्य उप-प्रतिनिधि सभा अलवर तथा आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर द्वारा साफा पहनाकर, माल्यार्पण कर तथा प्रतीक चिन्ह प्रदान कर प्रान्तीय सभा के उपस्थित 26 पदाधिकारियों एवं सदस्यों का भव्य अभिनन्दन किया गया। बैठक का संचालन अमरमुनि प्रदेश महामंत्री ने किया।

- अमरमुनि महामंत्री

यज्ञ मनुष्य में त्याग की भावना उत्पन्न करता है। क्योंकि स्वाहा शब्द कह रहा है– स्व का त्याग।

www.thearyasamaj.org

वेदों में समष्टिवाद

आचार्य राम गोपाल शास्त्री, फतेहपुर शेखावाटी

व्यष्टि माने होता है व्यक्तिवाद एवं समष्टि माने होता है समूहवाद, बहुवाद। व्यष्टिवादी व्यक्ति की सोच स्वयं अपने तथा अपने परिवार तक सीमित होती है। समष्टिवादी का सोच व्यापक होता है। वह मानव मात्र का हितचिन्तन करता है। समष्टिवादी के नारे होते हैं- जय जगत, वसुधैव कुटुम्बकम्। समष्टिवादी व्यक्ति हमेशा सोचा करता है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्।।

सभी लोग सुखी हों, सभी लोग स्वस्थ हों, सभी लोग कल्याण को देखें (प्राप्त करें), कोई भी मनुष्य दुःख का भागी न हो।

वेद समष्टिवादी ग्रंथ हैं। वेदों की सोच बहुत व्यापक है, विराट है। वेदों के ऋषियों ने परमात्मा से जो प्रार्थनाएँ की हैं उनमें कहीं भी यह नहीं लिखा कि - मुझे या मेरे परिवार को यह दीजिये। वे कहते हैं- हे ईश्वर! हम सबको यह दीजिये। मानव मात्र को ही नहीं प्राणी मात्र को सुख-शांति, कल्याण एवं समृद्धि दीजिये।

वैदिक ऋषियों ने कहीं भी 'अहम्, मह्म्' आदि एकत्ववादी शब्दों का प्रयोग नहीं किया। जहाँ भी मांगा है वहाँ नः तथा नो शब्दों का प्रयोग किया है अर्थात् हम सबको दीजिये।

वेदों में केवल मानवों के लिए ही नहीं पशु-पक्षियों के लिए भी कुशल-क्षेम चाहा गया है। यह मंत्र देखिये-

अन्नपते! अन्नस्य नो देहि अन्नमीवस्य सुष्मियाः
तारिष ऊर्ज नो देहि द्विपदे सं चतुष्पदे।

हे अन्नपति परमेश्वर!आप हम सभी दो पैर वाले तथा चार पैर वाले प्राणियों को भरपूर अन्न दीजिये।

एक अन्य मंत्र है-

शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः।

हम सबका कल्याण हो। वह परमात्मा हम सब पर सुखों की भरपूर वर्षा करे।

चारों वेदों में 'गायत्री मंत्र' के नाम से प्रसिद्ध मंत्र में देखिये-

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

'नः' अर्थात् हम सबकी बुद्धियों को आप सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दीजिये।

वेद किसी धर्म, मजहब, पंथ अथवा मत के ग्रंथ नहीं हैं। वेद मानव मात्र के लिए हैं, मानवतावादी हैं।

दरअसल जिस प्राचीन काल में भारत में वेदों का आविर्भाव हुआ था उस युग में भारत में कोई पंथ, मत अथवा मजहब था ही नहीं। केवल 'मानव जाति' ही भारत में थी। भारत में मूल रूप से जन्मे आदिवासियों, प्रारंभिक निवासियों, मूल निवासियों के ग्रंथ हैं वेद। भारत के मूल निवासियों के धर्म को कालान्तर में 'आर्य धर्म' भी कहा गया। प्राचीन काल में भारत देश को आर्यावर्त (आर्यों का देश) कहा जाता था। आर्य जाति शास्त्र विद्या तथा शस्त्र विद्या दोनों में समृद्ध थी। इसमें अनेक चक्रवर्ती सम्राट हुए जिन्होंने बड़े-बड़े विजय अभियान, अश्वमेघ महायज्ञ, राजसूर्यः, विश्वत्रि यज्ञ आदि कर भारत की विजय पताका विश्व में दूर-दूर तक फहराई। आर्य सम्राटों ने भारत का यश चारों दिशाओं में फैलाया। पूरे विश्व के लोग भारत में विद्या प्राप्ति के लिए आते थे। विश्वविद्यालयों का प्रचलन भारत की देखा-देख ही विश्व के अन्य देशों में हुआ।

भारतीय आर्यों में साथ रहने, साथ चलने, साथ जीने और साथ मरने की भावना रही है। कुछ लोग चारों वेदों में सबसे पुराने माने जाने वाले ग्रंथ ऋग्वेद में भी मानववाद, समूहवाद, समष्टिवाद का भरपूर निदर्शन किया गया है।

ऋग्वेद के मंडल 10 के सूक्त संख्या 191 के मंत्र सं. 1 से 4 को संज्ञान सूक्त तथा संगठन सूक्त कहा जाता है। इसमें सभी मानवों को एक साथ समान भाव से प्रेम से मिलकर, संगठित होकर रहने की शिक्षा दी गई है। वेदों की समष्टिवादी भावना का यह प्रबल प्रमाण है। आइये जरा इस सूक्त पर दृष्टिपात करें-

संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्याभर।। मंत्र।

हे ईश्वर! तू सभी प्राणियों को एक साथ मिलाता है। वह तू हम सबको (नः) वसूनि (धनों से) आभर परिपूर्ण कर दे।

सङ्गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे, सञ्जानाना उपासते।। मंत्र 2।।

हे सब मनुष्यों! तुम सब मिलकर चलो, मिलकर बोलो, हमारे चित्त समान होकर ज्ञान प्राप्त करें।

समानो मंत्रः समितिः समानी, समानं मनः यह चित्तमेषाम्।
समानं मंत्रमभिमंत्रये वः, समानेन वो हविषा जुहोमि।।

हम सबके विचार समान हों, हम सबकी सभा सौहार्दयुक्त हो, हम सबके कार्य समान हो, हमारे खान-पान, रहन-सहन समान हो। समान भाव से सबके कल्याण भाव से हम यज्ञ (श्रेष्ठ कार्य) करें।

समानी वः आकूतिः, समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो, यथा वः सुसहासति।।

हे मनुष्यों! तुम सबके संकल्प समान हों, तुम सबके हृदय मिले हुए हों, तुम्हारे मन समान हों। तुम लोग सदा अच्छी तरह मिलकर रहो।

लोग आर्य जाति में 'छुआछूत' की बीमारी की ओर संकेत कर आर्य धर्म (हिन्दुधर्म) को बदनाम करने का प्रयास करते हैं किन्तु अस्पृश्यता की भावना भारतीय शास्त्रों की देन नहीं है, शास्त्रों की भावना के विरूद्ध है। छुआ-छूत हिन्दुधर्म अथवा शास्त्रों में वर्णित नहीं है। महाभारत काल के बाद भारतीय समाज में कुछ गिरावट आई। उसी समय अस्पृश्यता की भावना भी फैली। समाज में कुछ स्थापित प्रभावशाली वर्गों ने अपने को श्रेष्ठ घोषित किया और आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े लोगों को उनके सामाजिक एवं मानवीय अधिकारों से वंचित करने की कुचेष्टा की। उन लोगों की उस दुश्चेष्टा को धर्म का अंग नहीं कहा जा सकता है क्योंकि धार्मिक ग्रंथों में कहीं भी मानव-मानव में भेदभाव करने का निर्देश नहीं है।

यज्ञ के द्वारा मनुष्य अपनी उन्नति अर्थात् ऊँचा उठता है। प्रज्ज्वलित अग्नि की ज्वालाओं को ऊँचा उठता देखकर मनुष्य के हृदय में उन्नति की प्रेरणा प्राप्त होती है तथा उसकी प्रसुप्त भावनाऐं जागृत हो जाती है।

www.thearyasamaj.org

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा

आर्य समाज कोटा का शताब्दी समारोह सम्पन्न

कोटा, 11 अगस्त। वर्तमान परिस्थितियों को देखकर कभी मन उदास होने लगता है, लेकिन आर्य समाज जैसे संगठनों को देखकर फिर से जोश भरने लगता है। आर्य समाज के कार्यक्रमों और विचार के बढते प्रवाह को देखकर कहा जा सकता है कि आने वाला युग संस्कारों से भरा होगा। यह बात डीएससीएल के कार्यकारी निदेशक केके कौल ने रविवार को प्रेस क्लब में आयोजित आर्य समाज के शताब्दी समारोह में कही। वे कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पद से बोल रहे थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चद्डा ने की। नगर विकास न्यास के चैयरमेन रवीन्द्र त्यागी सम्माननीय अतिथि थे। आर्य समाज कोटा के मंत्री कैलाश बाहेती तथा उपप्रधान हरिदत्त भार्मा भी मंच पर मौजूद थे। इस अवसर पर चार दर्जन आर्य समाज के कार्यकर्ताओं, महिलाओं, विद्वानों और समाजसेवियों का सम्मान भी किया गया।

केके कौल ने संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति को आगे बढाने और युवा पीढी तक ले जाने में आर्य समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। नगर विकास न्यास के चैयरमेन रविन्द्र त्यागी ने कहा कि आर्य समाज के द्वारा किए जा रहे सेवा कार्य मन को प्रसन्नता प्रदान करते हैं। आज भाहर की मलीन बस्तियो में पहुंचकर आर्य समाज ने सेवा के व्यापक कार्यों को अंजाम दिया है।

इनका हुआ सम्मान– इस अवसर पर आर्य समाज के लिए विशिष्ट कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं तथा समाजसेवियों का सम्मान भी किया गया। आर्य समाज के लिए हमेशा मुक्तहस्त से दान करने वाले भीमसेन साहनी का साफा पहनाकर भावभीना अभिनन्दन किया गया। इस दौरान ओमप्रकाश आर्य, बिरधीचन्द्र शास्त्री, आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, रामदेव शर्मा, शोभाराम आर्य, केएल दिवाकर, सूरजमल त्यागी, रामप्रसाद याज्ञिक, भीमसेन साहनी, हंसा त्यागी, सरिता रंजन गौतम, लीला आडे, रमेश गोस्वामी, हेमेन्द्र विजयवर्गीय, डॉ. वेदप्रकाश गुप्ता, गजानन्द मेहता, हरिदत्त शर्मा, मधु शर्मा, अनिता गुप्ता, गायत्री दुबे, सीतादेवी बाहेती, कौशल्या तापडिया, गायत्री नागर, सुशीला कुर्मी, सुमनबाला सक्सेना, गायत्रीदेवी आर्या, रघुराज सिंह, योगेस्वरस्वरूप भटनागर, अरविंद पाण्डेय, ओमदत्त गुप्ता, नरदेव आर्य, नरेश विजयवर्गीय, ओमप्रकाश आर्य, उशा आर्य, भयोराज वशिष्ठ, अमरलाल गहलोत, भरत बाठला, प्रभुसिंह कुशवाह, प्रद्युम्न आर्य, हरिमोहन भार्मा का सम्मान किया गया।

अर्जुनदेव चद्डा

टमकोर चलो! आर्य समाज टमकोर, जिला झुंझुनु (राज.) का शताब्दी समारोह टमकोर चलो!

वैदिक संस्कृति व सभ्यता के प्रचार प्रसार में सतत प्रयत्नशील आपके प्रिय आर्य समाज टमकोर (झुंझुनु) का शताब्दी समारोह, आगामी योगेश्वर श्री कृष्ण जन्माष्टमी के पावन अवसर पर परम कल्याणकारी यजुर्वेद पारायण यज्ञ से शुरूआत करते हुए पंच दिवसीय महोत्सव आयोजित किया जा रहा है। इसमें 101 सपत्नीक यजमान, डॉ. आचार्य सूर्यादेवी चतुर्वेदा, शिवगंज (सिरोही-राजस्थान) के ब्रह्मत्व में यज्ञ में भाग लेंगे। एक यजमान हेतु आपकी सम्मति/उपस्थिति विशेष प्रार्थनीय है। इस अवसर पर समारोह अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्दजी सरस्वती, पिपराली-सीकर (राज.) पधार रहे है।

ओ३म् रायस्पोषा यज्ञमानं सचन्ताम्। अथर्व. 1/34/1

यज्ञकर्ता यजमान् को धन आदि विभूतियाँ प्राप्त होती है।

अनवरत वार्षिक उत्सव, साप्ताहिक यज्ञ एवं सत्संग आदि करते हुए, आर्य समाज टमकोर के 115 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित शताब्दी समरोह में भारतवर्ष के प्रख्यात यज्ञ-ब्रह्मा, सन्यासी, वैदिक विद्वान व भजनोपदेशक उपस्थित होकर आशीर्वचन देने के साथ-साथ अपनी ज्ञानधारा से उपस्थित जनता को आयायित करेंगे। **भव्य आयोजन-**

यजुर्वेद परायण महायज्ञ -पंच दिवसीय महायज्ञ ता. 28 अगस्त, बुधवार से 1 सितम्बर 2013 रविवार तक, सुबह 9.30 बजे से 11.00 बजे तक। यज्ञ, आर्य समाज प्रागण में नव-निर्मित यज्ञ वेदियों पर, प्रत्येक वेदी पर चार चार सपत्नीक यजमान, समाज द्वारा प्रदत-निर्धारित दुपट्टे, रूमाल की वेशभूषा में रहेंगे।

मध्याह्न सत्र- तीन दिनों का ता. 30,31 अगस्त एवं 1 सितम्बर, 2013 दोप. 2.30 बजे से शाम 5.00 बजे तक।

रात्रिकालीन सत्र- पांच दिनों का ता. 28,29,30,31 अगस्त एवं 1 सितम्बर, 2013 रात्रि 8.00 बजे से 10.30 बजे तक।

नोट- 31 अगस्त 2013 को आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की साधारण बैठक सायं 5 बजे से 7 बजे तक होगी।

आमंत्रित संतगण व विद्वद्वर्ग- * श्री स्वामी सुमेधानन्दजी सरस्वती, पिपराली-सीकर * डॉ. ब्रह्मचारी ओमस्वरूपार्य 'आयुर्वेद', डिकाडला * श्री स्वामी ब्रह्मानन्दजी सरस्वती, महेन्द्रगढ़ (हरि.)* डॉ. आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा, शिवगंज (सिरोही-राज.)* श्री विनोदजी शास्त्री, फतेहपुर * डॉ. ऋचा योगमयी योगाचार्या, सीतामढ़ी (बिहार)* श्री अनुज शास्त्री, सहारनपुर (युपी)* पंडित श्री कुलदीपजी (अपनी मंडली के साथ), बिजनोर *श्रीमती अंजली आर्या, धरोहड़ा- करनाल (हरि.)*पंडित श्री सहदेवजी बेधड़क (हरियाणा) *श्रीमती बहन कलावती, रेवाड़ी (हरि.)

अत: आप से विनीत अनुरोध हैं कि आप अपने परिवार एवं इष्टमित्रों के साथ उपरोक्त कार्यक्रमों में सम्मिलित होकर वेदज्ञान व यशोधन प्राप्त करने के साथ-साथ आपके प्रिय वैदिक संस्कृति के केन्द्र आर्य समाज टमकोर के शताब्दी समारोह को सफल व सार्थक करें। इसी अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की साधारण सभा में आप सादर आमंत्रित है।

यज्ञ से मनुष्य आत्म निरीक्षण करना चालू कर देता है। यानि अपनी बुराई भलाई पर सूक्ष्म दृष्टि रखता है, उसका अवलोकन करता है तथा परनिन्दा से यथाशक्ति पृथक रहता है।

www.thearyasamaj.org

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-51 / 2011 - 2013 / आर. एन. आई नं. 10471/60

श्रावणी पर्व (रक्षाबंधन) की हार्दिक शुभकामनाएँ

वैदिक धर्म में स्वाध्याय की सर्वोपरि प्रधानता है। समावर्तन संस्कार के समय आचार्य अपने शिष्यों से कहते है कि चाहे किसी भी आश्रम में रहो स्वाध्याय करने में कभी आलस्य-प्रमाद मत करना। स्वाध्याय को इतना महत्व देने का उद्देश्य यही है कि जिस प्रकार शरीर की स्थिति और उन्नति अन्न से होती है उसी प्रकार सारे शरीर का राजा मन का भी उत्कर्ष और शिक्षण स्वाध्याय से ही होता है और यतः मानसिक उन्नति के बिना आत्मिक उन्नति भी नहीं हो सकती। इसलिए स्वाध्याय आत्मिक उन्नति का भी प्रधान साधन है। अतः आर्यो हम वेद के स्वाध्याय करना कभी नहीं छोड़े। श्रावणी पर्व हमे यहीं संकेत देता है वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना आर्यो का परम धर्म है। प्रत्येक आर्य समाज वेद सप्ताह उत्साह के साथ मनावें।

अमर मुनि, मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा राज.

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजापार्क जयपुर

साधारण सभा की सूचना

महोदय,

आर्य प्रतिनिधि सभा की साधारण सभा की बैठक आर्य समाज टमकोर (झुंझुनू) कि शताब्दी समारोह के अवसर पर दिनांक 31 अगस्त 2013 को सायं 5 बजे से 7 बजे तक आर्य समाज टमकोर में रखी गई है जिसमें निम्न लिखित विषयों पर विचार किया जावेगा।

* गत कार्यकारिणी की बैठक का अनुमोदन
* आय-व्यय का ब्यौरा
* भजन उपदेशकों द्वारा ग्राम-ग्राम में वैदिक प्रचार कराये जाने की विस्तृत योजना पर विचार
* संविधान संशोधन पर विचार
* अन्य विषय प्रधान जी की स्वीकृति से

अतः आप सभी समाजों के पदाधिकारी एवं सदस्यगणों से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर बैठक को सफल बनाए।

अमर मुनि, मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा राज.

67वाँ स्वतंत्रता दिवस

के अवसर पर देशवासियों को आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की ओर से हार्दिक बधाई।

ईश्वर हमें भ्रष्टाचार, दुराचार, अन्याय, असमानता, शोषण के खिलाफ संघर्ष करने की शक्ति प्रदान करें।

अमर मुनि, संपादक

वांच्छित कामनाओं को पूर्ण करने वाले कर्म को यज्ञ कहते है।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर से सम्पादक एवं प्रकाशक अमरसिंह आर्य, मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक :
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर - 302004

प्रेषित

विशेष – आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों मे व्यक्त विचार लेखकों के अपने है। उनसे संम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।